साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ` 0.50
वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

फरवरी 2013 वर्ष 18, अंक 2

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 संपन्न

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 का गरिमापूर्ण समापन हो गया। अब अगला विश्व पुस्तक मेला (वि.पु.मे.) 2014 में लगेगा। 4 से 10 फरवरी, 2013 की अवधि में नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित वि.पु.मे. के इस 21वें संस्करण में देश की अल्पज्ञात विरासत को सामने लाने के उद्देश्य से लोक एवं जनजातीय साहित्य को मेले का थीम बनाया गया था। थीम मंडप में लोक एवं जनजातीय साहित्य का प्रदर्शन मुख्य आकर्षण था। जनजातीय ग्राम्य परिवेश की निर्मित झाँकी मनमोहक थी। यहाँ अनेक संगोष्ठियों, परिचर्चाओं एवं कार्यशालाओं के आयोजन हुए। जनजातीय जीवन पर बातें हुईं। परंपराओं को बचाने की बात कही गई। 'देशज' नाम से लोक एवं जनजातीय प्रदर्शनों के सिलसिले चले। प्रतिदिन विभिन्न प्रांतों के

पृ. सं. 2 पर जारी ...

जो पुस्तक से प्यार करो तो
दूर अंधेरा होता है
और यदि साक्षर बन जाओ
सुखद सबेरा होता है।

लक्ष्मी विमल, डालटनगंज, पलामू, झारखंड

'लाल बहादुर शास्त्री' पुस्तक का लोकार्पण

पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के सुपुत्र श्री सुनील शास्त्री के कर-कमलों द्वारा नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. राष्ट्रबंधु की नई पुस्तक 'लाल बहादुर शास्त्री' का लोकार्पण भोपाल में हुआ। बाल कल्याण एवं बाल साहित्य शोध केंद्र तथा दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय के तत्वावधान में दुष्यंत सभागार में 13 जनवरी, 2013 को यह लोकार्पण संपन्न हुआ। पुस्तक ट्रस्ट की सतत शिक्षा पुस्तकमाला के अंतर्गत प्रकाशित हुई है। श्री सुनील शास्त्री जी ने स्व. लाल बहादुर शास्त्री के प्रेरक तथा अनछुए प्रसंग सुनाए तथा डॉ. राष्ट्रबंधु की पुस्तक को महत्वपूर्ण बताते हुए प्रशंसा की। कानपुर से पधारे भारतीय

बाल कल्याण संस्थान के उपाध्यक्ष, पूर्व विधायक पं. भूधर नारायण मिश्र ने संक्रमण काल से गुजरते समाज पर चिंता जताई तथा बाल साहित्य द्वारा बच्चों में संस्कार निर्माण पर बल दिया। डॉ. राष्ट्रबंधु ने अपने वक्तव्य में कहा कि बच्चों में चरित्र तथा संस्कारों का विकास महान लोगों के जीवन परिचय तथा सद्साहित्य द्वारा ही किया जा सकता है तथा इससे भटके हुए समाज को बचाया जा सकता है। कार्यक्रम का संचालन लेखिका श्रीमती प्रीतिप्रवीण खरे ने किया। इस अवसर पर गीतकार अभिलाष, बाल साहित्यकार आशीष शुक्ला, पत्रकार शिव चरण चौहान आदि उपस्थित रहे। शोध केंद्र के निदेशक श्री महेश सक्सेना ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

मातृभाषा

जैसे चींटियाँ लौटती हैं
बिलों में
कठफोड़वा लौटता है
काठ के पास
वायुयान लौटते हैं एक के बाद एक
लाल आसमान में डैने पसारे हुए
हवाई अड्डे की ओर
ओ मेरी भाषा!
मैं लौटता हूँ तुम में
जब चुप रहते-रहते
अकड़ जाती है मेरी जीभ
दुखने लगती है
मेरी आत्मा। **–केदारनाथ सिंह**

भाषाएँ किसी भी संस्कृति का आईना होती हैं और एक भाषा की समाप्ति का अर्थ है एक पूरी सभ्यता और संस्कृति का नष्ट हो जाना।

नृत्य, संगीत, गायन, प्रदर्शन, अभिनय आदि अनेक प्रस्तुतियाँ हुईं। बाल एवं युवा मंडप में प्रतिदिन बच्चों एवं युवाओं के लिए गतिविधियाँ हुईं। नाटक, कार्यशाला, संगोष्ठी, समूह-चर्चा, संवाद, मुलाकात जैसे कई कार्यक्रम हुए। वक्ताओं ने पुस्तक एवं पुस्तक पठन पर अपनी बातें कहीं। ओड़िया लेखिका प्रतिभा राय ने कहा–अधिक से अधिक पढ़ें। दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दिनेश सिंह बोले–युवा के व्यक्तित्व-विकास में पुस्तकों की बहुत बड़ी भूमिका है। अच्छी पुस्तकों के भविष्य पर बात हुई। बच्चों और युवाओं में पुस्तकों के प्रति रुचि जागने की बात कही गई। ट्रस्ट पुस्तकालयों, स्कूलों आदि के लिए अच्छी पुस्तकों के चयन हेतु मार्गनिर्देशन करेगा, यह कहा गया। खेल-हस्तियों से मुलाकातें हुईं। विज्ञान पर चर्चा हुई। कला पर बात हुई। नृत्य हुए, संगीत के आयोजन हुए। कविता पाठ भी चला। हॉल को पुस्तकों से सजाया गया।

'लेखक मंच' में अनेक लेखक आए। पुस्तकों के लोकार्पण हुए। कविता पाठ और लेखक सम्मेलन हुए। नामवर सिंह, अशोक वाजपेयी, के. सच्चिदानंदन सरीखे दिग्गज लेखक आए। विभिन्न कार्यक्रमों में अनेक बातें उभरकर आईं। कहा गया–हिंदी में पुस्तकें बिक रही हैं, पर अँग्रेजी के अनुपात में कम। सचल पुस्तकालय की जरूरत बताई गई। किस्सागोई भी हुई। एक साहित्यिक आयोजन के अवसर पर अनामिका ने कहा–पुस्तकें जीवन का नमक हैं और इनके लिए दांडी यात्रा की तरह एक नमक आंदोलन होना चाहिए। 'किताब की यात्रा' विषय पर कार्यशाला हुआ। लोक तथा जनजातीय साहित्य पर विमर्श के क्रम में जनजातीय साहित्य पर रमणिका गुप्ता व श्याम सिंह शशि के उद्‌बोधन हुए। लेखक सम्मेलन में पुस्तकों के भविष्य समेत अनेक विषयों पर बातें हुईं। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने चिंतित होकर कहा–आज पुस्तकें अपने लिए जगह तलाश रही हैं। बच्चों ने पुस्तक के किसी पात्र का परिधान पहनकर अभिनय किया। ई-बुक्स पर भी चर्चा हुई। स्वामी विवेकानंद की डेढ़ सौवीं जयंती पर एक विशेष मंडप लगाया गया। मंडप में विवेकानंद के कई दुर्लभ छायाचित्र प्रदर्शित थे। 'जंगल के फूल' नामक छायाचित्र प्रदर्शनी में जनजातीय लोगों एवं जीवन के छायांकन थे। पुस्तक कला संस्थापन एक अभिनव प्रयोग था।

विश्व के 20 से अधिक देश और विश्व संगठनों के भी स्टॉल लगे थे। फ्रांस इस बार सम्मानित अतिथि देश था।

उद्‌घाटन मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री शशि थरूर ने किया। उन्होंने अपने विचार यों रखे–लोगों को पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने एवं पुस्तकों का उत्सव मनाने से अधिक आनंदित करने वाली कोई दूसरी चीज मैं नहीं देखता। मुख्य अतिथि डॉ. कर्ण सिंह ने कहा–पुस्तकें सभ्यता के विकास का केंद्र रही हैं। इसने सभ्यता के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पूरे कार्यक्रम में ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन एवं निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर की निरंतर और अनेक अवसरों पर उपस्थिति एवं सहभागिता रही। इनके कुशल निर्देशन में पुस्तक मेला ने नई ऊँचाइयाँ पाई। विश्व पुस्तक मेला अब से हर साल हुआ करेगा। 2014 में सम्मानित अतिथि देश पोलैंड होगा। थीम का चयन बाद में होगा। पुस्तक मेला के इस 21वें संस्करण का सह आयोजक था, आईटीपीओ। विदित हो कि पहला विश्व पुस्तक मेला 1972 में आयोजित हुआ था।

जब भी हम एक भाषा खोते हैं तो विश्व की एक दृष्टि खोते हैं

संदर्भ : अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, 21 फरवरी

''लोगों से उनकी भाषा में बात करो; अगर तुम अच्छे से ऐसा कर पाए तो वे कहेंगे–'हे भगवान, यह तो बिलकुल वही बोल रहा है जो मैं सोच रहा था!' और तब वे तुम्हारी इज्जत करना शुरू करेंगे और आजीवन तुम्हारी बात मानेंगे।'' **–ली लकोका**

मातृभाषा के संबंध में विद्वान लेखक का यह कथन सटीक और बेहद व्यावहारिक भी है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने मातृभाषा पर कहा था–''मातृभाषा की हमारी परिभाषा है, जिसके बोलने में अनपढ़ से अनपढ़ आदमी और बच्चा तक भी व्याकरण की गलती न कर सके।'' राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था–''कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं हो सकता जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता है।'' उन्होंने यह भी कहा था–''हमारी भाषा हमारा प्रतिबिंब है।'' प्रखर पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी ने तो यहाँ तक कहा कि ''मुझे देश की आजादी और भाषा की आजादी में से किसी एक को चुनना पड़े तो मैं निःसंकोच भाषा की आजादी चुनूँगा, क्योंकि मैं फायदे में रहूँगा। देश की आजादी के बावजूद भाषा की गुलामी रह सकती है लेकिन अगर भाषा आजाद हुई तो देश गुलाम नहीं रह सकता।'' लगभग सौ साल पहले भारतेंदु हरिश्चंद्र ने मातृभाषा के संबंध में जो लिखा वह तो जन-जन का कंठहार ही बन गया। उन्होंने लिखा था–निज भाषा उन्नति अहै / सब उन्नति को मूल / बिन निज भाषा ज्ञान के / मिटत न हिय को शूल। भाषा के संबंध में तो ऋग्वेद तक में विचार किया गया है। ऋग्वेद में कहा गया है–अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम, यानी, मैं (भाषा) राष्ट्र निर्मात्री और जनों को संबद्ध करने वाली हूँ।

जिस मातृभाषा पर वेद काल से लेकर आजतक के विद्वानों के ऐसे मार्मिक और संवेदनशील विचार हों उस मातृभाषा को भला कोई कैसे भूल सकता है अथवा उसकी अवहेलना कर सकता है! राहुल सांकृत्यायन तो मातृभाषा को 'जन्मसिद्ध अधिकार' ही

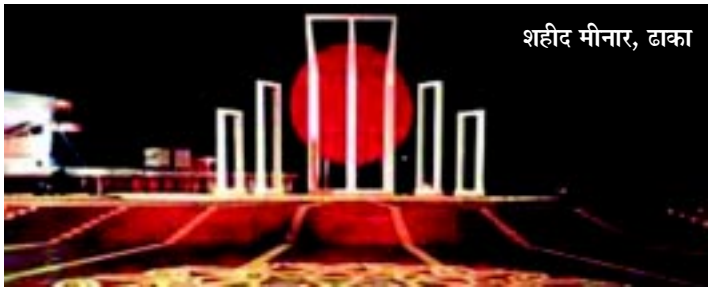

शहीद मीनार, ढाका

मातृभाषा वह बोली या भाषा है जो व्यक्ति की माता ने उससे बोलने के लिए बचपन में प्रयोग की हो। मातृभाषा की लिपि होना जरूरी नहीं है तथा कोई बोली भी मातृभाषा हो सकती है। हरियाणवी/मुलतानी/झांगी ये सब मातृभाषा हो सकती है। एक परिवार के सभी सदस्यों की एक ही मातृभाषा हो, यह भी जरूरी नहीं है। (जनगणना विभाग के अनुसार)

कहते हैं। उनका कथन है–''अपनी मातृभाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने का अधिकार हमारा वैसा ही जन्मसिद्ध अधिकार है, जैसा राजनीतिक स्वतंत्रता का।'' कहना न होगा कि मातृभाषा, हमारे रक्त, मांस और मज्जा तक से सीधा जुड़ा है। मातृभाषा से प्रेम के कारण लोगों ने अपना बलिदान तक दिया है। दरअसल, बांग्लादेश के कुछ ऐसे ही बलिदानियों की याद में 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है।

इस बलिदान का किस्सा कुछ यों है कि 1948 में, स्वाधीनता के वर्ष भर बाद, पाकिस्तान ने उर्दू को राष्ट्रीय भाषा घोषित कर दिया। इससे पूर्वी पाकिस्तान के बांग्ला भाषा बहुल क्षेत्र के लोगों में जबर्दस्त प्रतिक्रिया हुई। लोगों ने जगह-जगह, विशेषकर ढाका में, विरोध-प्रदर्शन शुरू कर दिया। सरकार ने इन प्रदर्शनों पर रोक लगा दी, पर लोग नहीं माने। 21 फरवरी, 1952 को ढाका विश्वविद्यालय में छात्रों के विरोध-प्रदर्शन पर पुलिस फायरिंग में 4 छात्र शहीद हो गए। अंततः सरकार ने 1956 में 29 फरवरी को बांग्ला को वैधानिक तौर पर मान्यता दे दी। 1971 में पाकिस्तान से मुक्त होने पर पूर्वी पाकिस्तान, यानी बांग्लादेश में बांग्ला देश की मुख्य सांविधानिक एवं मान्यताप्राप्त भाषा बन गई। इसी घटना की पृष्ठभूमि में संयुक्त राष्ट्र के शैक्षणिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन, यूनेस्को (UNESCO) की आम सभा ने 17 नवंबर, 1999 को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस संबंधी प्रस्ताव को स्वीकृति दी और सन् 2000 से प्रत्येक वर्ष 21 फरवरी को यह दिवस मनाया जाने लगा। पूरे विश्व में भाषायी और सांस्कृतिक विविधता तथा बहुभाषिकता को बढ़ावा देने तथा भाषाओं के संरक्षण के उद्देश्य से यह दिवस मनाया जाता है।

बांग्लादेश में तो 21 फरवरी को राष्ट्रीय अवकाश तक होता है। बलिदानियों की याद में बनाए गए 'शहीद मीनार' पर इस दिन लोग जाकर पुष्प अर्पित करते हैं। इस दिन लोग स्वयं के लिए या

भाषा का सार है संवाद, भाषण नहीं। भाषा अपनी पूर्णता में किसी तरह की एकांगिकता बर्दाश्त नहीं करती। –अनामिका

जब लोग अपनी भाषा को संरक्षित करते हैं तो वे स्वतंत्रता के चिह्नों को संरक्षित करते हैं। –जोस राइजल

फिर अपनी महिला सहकर्मियों/सहपाठियों/मित्रों के लिए काँच की चूड़ियाँ खरीदते हैं, अच्छा भोजन करते हैं और पार्टियाँ आयोजित करते हैं। इस दिन साहित्यिक पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं अथवा अन्य साहित्यिक आयोजन होते हैं। यह दिन बांग्लादेश में अपनी भाषा से प्रेम जताने का दिन होता है। दुनिया के अन्य हिस्सों में भी, जहाँ बांग्लादेशी नागरिक बहुसंख्या में हैं, शहीद मीनार की प्रतिकृति बनाई गई है; उदाहरणतः, लंदन और सिडनी में।

'यूनेस्को' हर वर्ष अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का कोई-न-कोई 'थीम' घोषित करता है। इस वर्ष, यानी 2013 का थीम है–*द बुक* (पुस्तक)। 2012 का थीम था–*मातृभाषा शिक्षण एवं समावेशी शिक्षा।* इसी प्रकार कुछ अन्य थीम थे–2011 - *भाषाओं और भाषायी विविधता के संरक्षण एवं प्रोन्नयन हेतु सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकियाँ,* 2010 - *संस्कृति के पुनर्मेल के लिए अंतरराष्ट्रीय वर्ष,* 2007 - *बहुभाषिक शिक्षा,* 2006 - *भाषाएँ एवं साइबर स्पेस,* 2005 - *ब्रेल और चिह्न भाषाएँ,* 2004 - *बाल शिक्षण,* 2002 - *भाषायी विविधता : 3000 भाषाएँ खतरे में,* आदि।

सन् 2008 को अंतरराष्ट्रीय भाषा वर्ष के रूप में मनाया गया था। इस वर्ष का नारा था–भाषाओं का अपना महत्व है!

पुण्यतिथि 27 फरवरी पर स्मरण स्वरूप

अप्रतिम वीर चंद्रशेखर आजाद

देश की आजादी की लड़ाई में जिन रणबांकुरों ने आने प्राणों की आहुति दी उनमें क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद एक थे। महज पच्चीस वर्ष आयु में इस वीर ने अपना बलिदान कर दिया था। इस क्रांतिवीर के जीवन का अंत इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क (अब आजाद पार्क) में 27 फरवरी, 1931 को हुआ। घटनाक्रम कुछ यों रहा–अँग्रेज एस.पी. नॉट बाबर सदल-बल आजाद को घेरे हुआ था। दोनों तरफ से गोलीबारी चल रही थी। आजाद के पास कुछ गोलियाँ शेष रह गईं। जाते-जाते आजाद ने नॉट की कलाई पर निशाना साधकर ऐसे पिस्तौल चलाया कि उस पुलिस अधिकारी की कलाई की हड्डी टूट गई। पुलिस के कुछ अन्य लोग भी घायल हुए। अब आजाद के पास केवल एक गोली शेष रह गई। अब क्या करें? उन्होंने अपनी कनपट्टी से सटाकर पिस्तौल चला दी और आत्मबलिदान कर दिया। आजाद की बहादुरी से नॉट बाबर इतना प्रभावित हुआ कि भारत की आजादी के बाद लंदन लौटने से पूर्व उसने आजाद की पिस्तौल लौटाने के लिए एक शर्त रखी, उनकी एक फोटो अपने पास रखने की। अंततः ऐसा ही हुआ। नॉट बाबर को आजाद की फोटो दे दी गई, उसने पिस्तौल लौटा दी।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत प्रकाशित नई पुस्तकें

झिलमिल

निशात फातिमा पृष्ठ 20 ` 13.00

ISBN 978-81-237-6629-4

झिलमिल एक किशोरवय लड़की है। बचपन वाली शरारतें अब भी बनी हुई हैं। वही अल्हड़पन, इधर-उधर दौड़ा-भागी। पर माँ की सख्ती अब बढ़ गई है। बात-बात पर टोका-टाकी। ऐसे नहीं, ऐसे रहो, ऐसे नहीं, ऐसे करो आदि। झिलमिल परेशान। माँ को क्या हो गया है! झिलमिल पास में रहने वाली चाची से बहुत घुली-मिली है। एक दिन तंग आकर वह चाची के पास जो गई, सो लौटी ही नहीं। माँ, भाई सब परेशान। रोते-रोते माँ चाची के घर पहुँची, सब हाल कहा। चाची बनते हुए बोली—कहीं शहर न भाग गई हो! नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता! माँ बोली। तब तक झिलमिल भी एक कमरे से निकलकर आ जाती है और माँ से लिपट जाती है। चाची के चेहरे पर मंद-मंद मुस्कान। कहती है—अब झिलमिल बड़ी हो गई है। हर बात पर टोकना ठीक नहीं। प्यार से बातें करो, समझाओ। माँ ने कहा—मैं तुम्हें अब कभी नहीं डाँटूँगी। झिलमिल भी खुश थी।

रोशनी

अनुराग वाजपेयी पृष्ठ 16 ` 11.00

ISBN 978-81-237-6630-0

राजस्थान के बाड़मेर जिले के गाँव कवास में किशोर सिंह का परिवार। भेड़ों की ऊन बेचने का करोबार है। किशोर को दो लड़के हैं, अब एक बेटी हुई। नाम रखा गया—रोशनी। रोशनी तीन साल की थी तब गाँव में बाढ़ आई। घर से सब भागे, पर हबड़-तबड़ में रोशनी रह गई। अगले दिन रोशनी घर से सही-सलामत मिल गई। इस घटना के बाद सारे परिवार को रिश्ते की एक शादी में अहमदाबाद जाना हुआ। खेलते-खेलते रोशनी गुम हो गई। सारा घर हलकान। रोशनी मिली नहीं। तीसरे दिन एक पुलिसवाला आया। किशोर को कुछ कपड़े दिखाए। किशोर पहचान गया, ये रोशनी के कपड़े थे। पुलिसवाले ने कहा—हमने एक तांत्रिक को पकड़ा है। तांत्रिक ने किसी परिवार में लड़का होने की कामना के चक्कर में रोशनी की बलि दी थी। रोशनी बाढ़ से तो बच गई थी, पर तांत्रिक से नहीं बच पाई। किशोर अब लोगों को तांत्रिकों-ओझाओं से जागरूक करता है।

सब रो पड़े

डॉ. हूंदराज बलवाणी पृष्ठ 16 ` 11.00

ISBN 978-81-237-6628-7

एक घर के बाहर बुढ़िया खड़ी है। हाथ में पत्र है। लोगों से विनती करती है, पत्र पढ़कर सुना दो। कोई नहीं रुकता। एक दूधवाला रुकता है। पत्र उलटता-पुलटता है, फिर रोने लगता है। बुढ़िया को शक होता है—शायद बेटे का पत्र है, कोई अनहोनी हो गई होगी। वह भी रोने लगती है। फुग्गेवाला रुकता है। वह भी रोने लगता है। तब सैनिक रुकता है। रोने का कारण पूछता है। फुग्गेवाला बताता है कि लिखना-पढ़ना नहीं जानने के कारण उसे घाटा हुआ था। इसलिए अब रो रहा है। बुढ़िया कहती है कि अनपढ़ होने के कारण पत्र नहीं पढ़ सकती इसलिए रो रही है। दूधवाला कहता है कि बचपन में पढ़ा नहीं, सो पत्र कैसे पढ़ता! शर्म से मैं रोने लगा। सैनिक ने समझाया—तुम जैसे लाखों हैं। अब अगर पढ़ाई का महत्व समझ आया, बड़ी बात है। तब सब कहते हैं—मैं पढ़ूँगा, मैं भी पढ़ूँगा। एक रोचक एकांकी।

गाँव की बेटी

संदीप 'सृजन' पृष्ठ 16 ` 11.00

ISBN 978-81-237-6631-7

संपत नगर के लोगों में खुशी है। गाँव में हाई स्कूल और हॉस्पिटल के लोकार्पण हेतु मुख्यमंत्री सहित कई मंत्री आ रहे है। अतिथियों का स्वागत वंदना कर रही है। वंदना, गाँव की पहली उच्च शिक्षित लड़की, जमींदार सूर्यप्रताप की पोती। माँ शिक्षित थी, सो वंदना को भी पढ़ाया। पुरुष प्रधान इस परिवार की अन्य बहुओं का बेटी होने की वजह से बार-बार गर्भपात हो चुका है, पर वंदना की माँ ने विरोध किया था। वंदना पैदा हुई, पढ़ी-लिखी, बड़ी हुई। घर के पुरुषों को छोड़ सभी महिलाएँ वंदना को प्यार करतीं। आज वंदना डॉक्टर बन गई थी। वह सामाजिक कार्यकर्ता भी थी। गाँव में इन निर्माण कार्यों की पहल उसी की थी। लोकार्पण-अवसर पर जमींदार ने पोती की जमकर प्रशंसा की, अपने किए की माफी माँगी। कहा, बेटी श्राप नहीं वरदान होती है। मुख्यमंत्री व सभी अतिथि हैरान। जमींदार ने वंदना को दो सौ एकड़ जमीन देने की घोषणा की। जमीन पर एक संस्था बननी थी, नाम होता—गाँव की बेटी।

कविताओं के रंग

नववर्ष में

प्रेम वोहरा, दिल्ली

आओ मित्र
साथ दें
किसी ऐसे साथी को
दुखों से उबारें
जो लाचार हो, अनाथ हो
भीगी हुई आँखों के
काँपते हुए हाथों के
सहारे बनें हम, नववर्ष में।

खेते-खेते जिंदगी की नाव को
खो चुके हों जीने की चाह जो
डगमगाती उन नावों के लिए
किनारे बनें हम, नववर्ष में।

जूझते हुए गमों में, जो कोई करीब हों
बेकस हों, बीमार हों, लाचार व गरीब हों
दम तोड़ते भूखे पेटों के लिए
गुजारे बनें हम, नववर्ष में।

अपनी खातिर ही जिया, तो क्या जिया
अपना ही सब कुछ किया, तो क्या किया
करो कुछ ऐसा कि कहें गैर भी
तुम्हारे बनें हम, नववर्ष में।

गाँव की माटी

शंकर सुल्तानपुरी

गाँव की माटी
कुएँ का पानी
दूध-दही, माखन गुड़धानी।

सोना, रूपा
राधा, रानी
मोहन, माधव
मधु, रमजानी।

आम की बगिया
बेर की झबिया
ठुमक-ठुमककर
रूबी, रबिया।

नाच दिखाए
नन्ही बछिया
कूद-फाँद मनमानी।

रात-रात भर
थपकी देकर हमें सुलाए
नाना-नानी
अब तो हो गए एक कहानी।

लखनऊ, उ.प्र.

पुस्तकें मित्र हमारी

डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी

रहीं पुस्तकें मित्र हमारी
अपने अक्षर-अक्षर द्वारा
हमसे ये बातें करती हैं
दूर अकेलापन है होता
सद्भावों से ये भरती हैं
अंधकार में ज्योति बाँटती
हम रहते इनके आभारी
बौनी लगतीं सभी सरहदें
ऐसा पंख हमें देती हैं
मरुथल को भी सरिता करतीं
नाविक बन नौका खेती हैं
मानवता का पाठ पढ़ातीं
सबको हैं लगतीं ये न्यारी।

बरेली, उ.प्र.

पढ़ेंगे हम

चलेंगे, बढ़ेंगे, पढ़ेंगे हम
जीवन में बहुत कुछ करेंगे हम
अशिक्षा के अभिशाप से मुक्त हो
सहारा देश का बनेंगे हम।

गोपीनाथ कालभोर, खंडवा, म.प्र

पुस्तकें

प्रो. सुंदरलाल कथूरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली

ज्ञान का भंडार हैं ये पुस्तकें
प्रगति का आधार हैं सद्पुस्तकें
रात-दिन इनको पढ़ो तुम मन लगाकर
मुक्ति का भी द्वार हैं ये पुस्तकें।

पुस्तकों में ज्ञान है विज्ञान है
पुस्तकों में ही छिपा भगवान है
ये अंधेरा दूर कर देती उजाला
पुस्तकों में प्रेम है ईमान है।

जो बना है पुस्तकें पढ़कर बना है
जिंदगी की राह में आगे बढ़ा है
हर मुसीबत से लड़ा सिर तानकर वह
पर्वतों की चोटियों पर भी चढ़ा है।

अक्षर-अक्षर जोड़ो
शब्दों से नाता जोड़ो
नए-नए अर्थ पाओगे
जीवन खुशहाल बनाओगे।
सुरेन्द्र 'अंशुल', अम्बाला सिटी, हरियाणा

हम आपको नमन करते हैं!

सुभद्रा कुमारी चौहान
पुण्यतिथि 15 फरवरी

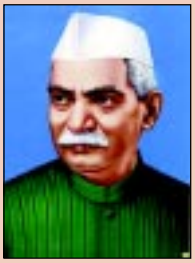

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
पुण्यतिथि 28 फरवरी

भटकाओ न मन
चंगा रखो तन
पुस्तकों को साथी
बनाओ राह-जन।
सिद्धेश्वर, पटना, बिहार

मेहनत करके सभी पढ़ेंगे
साक्षर भारत देश गढ़ेंगे।
रचना सिद्धा, जयपुर, राजस्थान

साक्षर बनें, साक्षरता अपनाएँ
सर्व शिक्षा अभियान को सफल बनाएँ।
डॉ. वासुदेवन 'शेष', चेन्नई, तमिलनाडु

सीखकर आप शिक्षा दे सकते हैं, लेकिन शिक्षा देकर आप सीखते हैं। –एक लैटिन कहावत

पाठकीय प्रतिक्रिया

- **सा. सं., जनवरी 2013 :** लघु रचनाएँ/क्षणिकाएँ प्रेरणादायक हैं और गंभीर भी। नववर्ष, छब्बीस जनवरी और गाँधी जी पर कविताओं की प्रस्तुति सामयिक और प्रभावशाली थीं। नवसाक्षरों, साक्षरताकर्मियों के अलावा बच्चों एवं बड़ों के लिए भी महत्वपूर्ण है यह पत्रिका। **सुरेन्द्र 'अंशुल',** अम्बाला सिटी, हरियाणा
- पत्रिका साक्षरताकर्मियों के साथ-साथ सामान्य पाठकों के लिए भी सूचना-सेतु का काम कर रही है। नवसाक्षरोपयोगी प्रेरक और रचनात्मक साहित्य (पुस्तकें) के संबंध में संक्षिप्त जानकारी उपयोगी है। महापुरुषों/विद्वानों के प्रेरक वचन/कथन छापकर आप पाठकों का भला कर रहे हैं। प्रायः सभी अंकों में प्रेरक-उद्बोधक कविताएँ होती हैं। **युगेश शर्मा,** भोपाल, म.प्र.
- **दिसंबर 2013 :** मुखपृष्ठ आलेख 'काका कालेलकर : हिंदी के अनन्य उपासक' जानकारी बढ़ाने वाला था। डॉ. दुबे की कविता 'बेटी' तथा डॉ. श्रीप्रसाद की कविता 'पढ़ने जाना है' पसंद आईं। रमाकांत जी की कविता 'पढ़ें-पढ़ाएँ' प्रेरणाप्रद रही। अन्य रचनाओं ने भी पत्रिका में चार चाँद लगाए।
प्रो. शामलाल कौशल, रोहतक, हरियाणा
- पत्रिका में पूर्व की भाँति संबंधित माह की जानकारियों का निरंतर समावेश इसके हरेक अंक को संग्रहणीय बना दे रहा है। उत्कृष्ट संयोजनत्व के लिए नमन! संपादक जी, अच्छी, ज्ञानप्रद पुस्तकें ही हमें जीवन जीने की सच्ची राह दिखाती हैं। विद्या प्राप्ति का महत्वपूर्ण साधन है पुस्तक। समाज के हित-साधन हेतु नित्यप्रति पुस्तक पठन-पाठन अपेक्षित है। नेशनल बुक ट्रस्ट का पठन-पाठन और साक्षरता-प्रसार के क्षेत्र में किया जाने वाला प्रयास श्रेय व सराहनीय है। आभार!
शम्भु प्रसाद भट्ट 'स्नेहिल', गोपेश्वर, चमोली, उत्तराखंड
- हमेशा की तरह उत्कृष्ट सामग्री की उम्दा प्रस्तुति सराहनीय है। कविवर बच्चन की कविता प्रेरणादायी है। काव्य प्रस्तुति पसंद आई। **सीमा व्यास,** इंदौर, म.प्र.
- साक्षरताकर्मियों पर केंद्रित यह पत्रिका आम पाठकों एवं बच्चों-छात्रों के लिए भी बेहद उपयोगी है। कविताएँ अकसर गेय होने से बच्चों-छात्रों को लुभाती हैं।
सुरजीत सिंह जोबन, दिल्ली
- संगत-सार्थक चित्रों से सुसज्जित प्रेरक, अन्वेषणपूर्ण एवं उपयोगी पत्रिका का नवीन अंक (दिसं.) पढ़कर मन प्रसन्न हो गया। मालवीय, मैथिलीशरण आदि सरीखे महापुरुषों, विद्वानों से संबंधित आलेख उनके जीवन एवं विचारों के कारण उद्बोधक बन गए। काका कालेलकर विषयक आलेख खोजपरक एवं प्रोत्साहक लगा। नवसाक्षरों के लिए किफायती मूल्य में पुस्तकें उपलब्ध कराके आप बड़ा काम कर रहे हैं। नाममात्र के मूल्य पर सुमुद्रित एवं सुसंपादित पत्रिका के लिए आपको धन्यवाद!
पंडित बी.एन. मुदगिल, गद्दी खेड़ी, रोहतक, हरियाणा
- आपका यह प्रयास नवसाक्षरों/साक्षरताकर्मियों के लिए उपयोगी होने के साथ-साथ हिंदीप्रेमियों के लिए भी प्रेरक-उद्बोधक है। आपका यह उपक्रम प्रभावित करने वाला है। आप अपने इस अभियान में निरंतर लगे रहें, समाज का भला होगा।
डॉ. योगेश कुमार 'निर्भीक', मथुरा, उ.प्र.
- कालेलकर, गुप्त एवं मालवीय सरीखे व्यक्तित्व पर आलेख छापकर नवसाक्षरों को शिक्षित-प्रेरित करने का आपने स्तुत्य प्रयास किया है। भिखारी ठाकुर के साहित्यिक-सामाजिक अवदान से परिचय सराहनीय था। **डॉ. शिवकुमार खंडेलवाल,** सोनीपत, हरियाणा

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *–संपा.*

नवसाक्षरों के लिए

"पापा, मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता है!"

बालिका शिक्षा की अप्रतिम प्रतीक बनी मलाला

उसका नाम मलाला है, मलाला यूसुफजई। पाकिस्तान की इस किशोरवय बालिका को तालिबानी आतंकियों ने पाकिस्तान में गोली मारी थी, पर वह बच गई। 14 साल की लड़की ने आतंकियों का कुछ नहीं बिगाड़ा था, बस, उसने स्वात घाटी की लड़कियों की शिक्षा की हिमायत की थी। आतंकियों को यह बुरा लगा।

जरा पीछे चलें। सन् 2008 में स्वात शहर मिंगोरा में तालिबानियों ने 400 स्कूलों को बंद करा दिए। वजह–शिक्षा से लड़कियाँ बिगड़ जाती हैं। पर मलाला को स्कूल जाना अच्छा लगता था। मलाला एवं उसकी सहेलियों ने स्कूल जाने का दूसरा रास्ता अख्तियार किया–वे सभी स्कूल ड्रेस की बजाय सादे कपड़ों में स्कूल जाने लगीं। किताबें शाल के भीतर छिपाई जातीं। शिक्षा की इस पूरी कवायद की 'नायिका' थी मलाला। वह रातोंरात ख्यात हो गई। बी.बी.सी. उर्दू के लिए नाम बदलकर वह डायरी लिखने लगी। 2011 में उसे पाकिस्तानी प्रधानमंत्री गिलानी ने वीरता का राष्ट्रीय पुरस्कार दिया।

मलाला चाहती थी कि पाकिस्तान ऐसा मुल्क बने जहाँ सभी लड़कियों को तालीम हासिल करने की आजादी हो। उस छोटी उम्र में मलाला से अमेरिका के एक कद्दावर मंत्री रिचर्ड हालब्रोक आकर मिले। मलाला ने स्वात घाटी में स्थायी शांति के अमेरिकी विचार पर अमेरिकी राष्ट्रपति ओबामा की तारीफ की। तालिबानियों ने उसे अमेरिका का एजेंट कहा और 9 अक्तूबर, 2012 को उस पर हमला कर दिया। गोलीबारी में वह बुरी तरह घायल हुई; दो सहेलियाँ भी जख्मी हुईं। पाकिस्तान के अलावा लंदन में भी उसका इलाज चला। अब वह स्वस्थ है। मलाला का जब इलाज चल रहा था तो लाहौर व कराची की सड़कों पर नारे लग रहे थे–**डरते हैं बंदूकों वाले एक निहत्थी लड़की से, फैले हैं हिम्मत के उजाले एक निहत्थी लड़की से।**

मलाला की तुलना जॉन ऑफ आर्क और झांसी की रानी से की जाने लगी है। मलाला आज शिक्षा पाने की तलबगार लड़कियों के लिए एक 'आइकॉन' (आदर्श) बनकर उभरी है। पाकिस्तान के लोग कहते हैं–वे (तालिबानी) उन लड़कियों की हिम्मत को नहीं तोड़ सकते जो अपनी आँखों में पढ़ाई का अरमान लिए आतंक के अंधेरे में भी उम्मीद के जुगनू तलाशती हैं। 'कुरान' भी तो कहता है–'पालने से लेकर कब्र तक तालीम हासिल करते रहो।' मलाला लड़ रही है–आतंक से, अंधकार से, आततायियों से। पूरा देश और पूरी दुनिया उसके साथ है, सिवाय आतंकियों के। बालिका शिक्षा की प्रतीक बन गई है वह।

✦ **जब कोई भाषा मरती है तो एक संस्कृति मरती है, एक मानव-समाज मरता है।**

✦ **मातृभाषा विचारों की वाहिनी और संस्कारों की जननी है।**

✦ **मातृभाषा का अनादर माँ के अनादर के बराबर है।**

✦ **कोई भी भाषा मानव इतिहास की धरोहर होती है।**

✦ **भाषायी विविधता मानवीय विविधता के बराबर है।**

R. N. I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/2/2013

लघुकथा

अपनी-अपनी जगह

एक दर्जी था मनाराम। गाँव में छोटी-सी दुकान थी। वह नियमित अपनी दुकान खोलता। काम को पूजा की तरह मानता। मन लगाकर गाँववालों के कपड़े सीलता। मनाराम की गाँव में बहुत पूछ-परख होती।

उसी गाँव में रहता था किशन। वह रोज मनाराम की दुकान पर आता। काम सीखने की गरज से। वह ओटले पर बैठकर चुपचाप मनाराम को देखता रहता।

मनाराम कपड़ा निकालता। नाप देखकर निशान लगाता। कपड़ा काटता और कैंची को पैर के नीचे दबा देता। पक्की सिलाई के पहले सूई से कच्ची सिलाई करता। सिलाई के बाद सूई को टोपी में लगा लेता। रोज का यही नियम।

किशन से रहा नहीं गया। एक दिन पूछ बैठा, ''दादा, कैंची इतनी महँगी, कपड़े काटने का बड़ा काम भी करती है। इसे तो काम के बाद आप पैर के नीचे दबा देते हो। और ये जरा-सी सूई, कच्ची सिलाई करती है। इसे काम के बाद टोपी में लगाते हो। ऐसा क्यों?''

मनाराम ने अपने हाथ का काम रोककर कहा, ''काटने वाले को हमेशा पैरों के नीचे रखना और जोड़ने वाले को सिर पर बैठाना। मुझसे काम सीखो, न सीखो, पर ये सीख जरूर याद रखना।''

सीमा व्यास, इंदौर

पत्थर पर लिखी एक किताब!

म्यांमार की पूर्व राजधानी और देश की सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक मांडले शहर में एक अद्‌भुत 'किताब' रखी हुई है जो लगभग डेढ़ सौ वर्षों के मौसम के हर झंझावातों को झेलकर आज भी सुरक्षित है। इस अद्‌भुत किताब के 'पन्ने' 44 एकड़ क्षेत्र में बिखरे पड़े हैं तथा इसमें 729 'पन्ने' हैं। जी हाँ, अपने आप में सबसे अलग यह किताब संगमरमर के पृष्ठों (पत्थरों) पर उकेरकर लिखी गई है। मांडले पर्वतमाला के दक्षिण-पूर्व में स्थित विश्वविद्यालय परिसर में रखी इस पुस्तक पर पूरा बौद्ध साहित्य 'त्रिपिटिका' पाली भाषा में खोदकर लिखा गया है, जो 1857 में मांडले के राजा मिंडान द्वारा बनाए गए 'कुथो डा पैगोडा' का हिस्सा है। पुस्तक के लिखे जाते समय राजा के निर्देश पर पुस्तक को पूरी तरह त्रुटिरहित लिखा गया है। दिलचस्प बात यह है कि अगर कोई व्यक्ति इस पुस्तक को रोजाना 8 घंटा पढ़े तो पूरी पुस्तक को पढ़ने में उसे 450 दिन लगेंगे, यानी साल भर से ज्यादा। सन् 1900 में इसे पुस्तकाकार प्रकाशित करने का फैसला लिया गया और छापा गया।

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070